

बाल विकास योजनाओं का विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ. श्रीनिवास मिश्र

संध्या तिवारी

सेवानिवृत्त प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग

शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग

शासकीय महाविद्यालय अमरपाटन जिला मैहर

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय रीवा

मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश

शोध सारांश -

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य बाल विकास योजनाओं का विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के सामाजिक, भावनात्मक, नैतिक एवं मानसिक विकास को भी समान महत्व दिया जाता है। भारत सरकार द्वारा संचालित विभिन्न बाल विकास योजनाएँ, जैसे समेकित बाल विकास सेवा (पब्लि), प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना, पोषण अभियान, समग्र शिक्षा अभियान तथा आंगनवाड़ी सेवाएँ, बच्चों के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इन योजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा एवं शिक्षा संबंधी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों का विकास होता है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि बाल विकास योजनाएँ विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग, सहानुभूति, नेतृत्व क्षमता, समूह सहभागिता एवं सामाजिक समायोजन जैसे गुणों के विकास में सहायक हैं। साथ ही, ये योजनाएँ विद्यार्थियों के भावनात्मक संतुलन, मानसिक स्वास्थ्य तथा सकारात्मक व्यवहार को भी प्रभावित करती हैं। यद्यपि योजनाओं के क्रियान्वयन में कुछ चुनौतियाँ विद्यमान हैं, फिर भी उनका प्रभाव विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर सकारात्मक पाया गया है।

मुख्य शब्द :- बाल विकास योजनाएँ, सामाजिक विकास, भावनात्मक विकास, विद्यार्थी, समेकित बाल विकास सेवा, पोषण, सामाजिक समायोजन, आत्मविश्वास, मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक संतुलन आदि।

परिचय

मानव जीवन के विकास में बाल्यावस्था का विशेष महत्व है। बाल्यावस्था वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति के व्यक्तित्व, व्यवहार, आदतों, मूल्यों, भावनाओं तथा सामाजिक संबंधों की आधारशिला रखी जाती है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके बच्चों पर निर्भर करता है, क्योंकि वही आगे चलकर समाज और देश के विकास में योगदान देते हैं। इसलिए बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करना प्रत्येक राष्ट्र की प्राथमिक जिम्मेदारी है। बच्चों के विकास में केवल शारीरिक एवं बौद्धिक विकास ही महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि सामाजिक एवं भावनात्मक विकास भी उतना ही आवश्यक होता है। सामाजिक और भावनात्मक रूप



से संतुलित विद्यार्थी जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में सफलतापूर्वक समायोजन स्थापित कर पाते हैं तथा समाज के उपयोगी नागरिक बनते हैं।

शिक्षा को मानव विकास का सबसे प्रभावशाली साधन माना जाता है। शिक्षा व्यक्ति को केवल ज्ञान प्रदान नहीं करती, बल्कि उसे सामाजिक मूल्यों, नैतिक आदर्शों तथा जीवनोपयोगी कौशलों से भी परिचित कराती है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करना है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक विकास शामिल है। इसी कारण वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम (Social and Emotional Learning) को विशेष महत्व दिया जा रहा है। यह माना जाता है कि यदि विद्यार्थी सामाजिक रूप से समायोजित और भावनात्मक रूप से संतुलित होंगे, तभी वे अपनी शैक्षिक एवं व्यक्तिगत क्षमताओं का पूर्ण विकास कर सकेंगे।

सामाजिक विकास से आशय उस प्रक्रिया से है जिसके माध्यम से बालक समाज के नियमों, मूल्यों, परंपराओं एवं व्यवहारों को सीखता है तथा दूसरों के साथ सामंजस्य स्थापित करना सीखता है। सामाजिक विकास बालक को सहयोग, सहानुभूति, अनुशासन, नेतृत्व, समूह भावना तथा उत्तरदायित्व जैसे गुणों से युक्त बनाता है। दूसरी ओर भावनात्मक विकास का संबंध बालक की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और उचित ढंग से व्यक्त करने की क्षमता से है। भावनात्मक रूप से विकसित बालक आत्मविश्वासी, संवेदनशील, धैर्यवान तथा मानसिक रूप से स्वस्थ होता है। सामाजिक एवं भावनात्मक विकास एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं और दोनों मिलकर बालक के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत जैसे विकासशील देश में बच्चों के समग्र विकास को प्रभावित करने वाले अनेक सामाजिक एवं आर्थिक कारक मौजूद हैं। गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता, पारिवारिक तनाव तथा संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ बच्चों के विकास को प्रभावित करती हैं। विशेष रूप से ग्रामीण एवं वंचित वर्गों के बच्चों को पर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ, पोषण तथा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध नहीं हो पाती, जिसके कारण उनके सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। ऐसे बच्चों में आत्मविश्वास की कमी, सामाजिक अलगाव, भय, तनाव तथा व्यवहार संबंधी समस्याएँ देखने को मिल सकती हैं।

इन चुनौतियों से निपटने और बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक बाल विकास योजनाएँ संचालित की जा रही हैं। इन योजनाओं का उद्देश्य बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, सुरक्षा तथा विकास के समान अवसर प्रदान करना है। बाल विकास योजनाएँ केवल बच्चों की शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे उनके सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को भी प्रोत्साहित करती हैं। इन योजनाओं के माध्यम से बच्चों को ऐसा वातावरण उपलब्ध कराया जाता है, जिसमें वे सुरक्षित, स्वस्थ एवं आत्मविश्वासी महसूस कर सकें।

भारत सरकार द्वारा संचालित समेकित बाल विकास सेवा (प्लै) योजना बच्चों के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। इस योजना के अंतर्गत बच्चों को पूरक पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ, टीकाकरण, स्वास्थ्य परीक्षण तथा पूर्व-प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है। आंगनवाड़ी केंद्रों में बच्चों को समूह गतिविधियों, खेलों तथा सामूहिक अधिगम के माध्यम से सामाजिक सहभागिता के अवसर प्राप्त होते हैं। इससे उनमें सहयोग, मित्रता, अनुशासन तथा सामूहिक कार्य करने की भावना विकसित होती है। साथ ही, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का सहयोग एवं स्नेह बच्चों के भावनात्मक विकास को भी प्रोत्साहित करता है।

इसी प्रकार प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना (PM POSHAN) विद्यार्थियों को विद्यालयों में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराती है। इस योजना का प्रभाव केवल बच्चों के पोषण स्तर पर ही नहीं पड़ता, बल्कि उनके सामाजिक विकास पर भी पड़ता है। विद्यालय में विभिन्न सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थी एक साथ बैठकर भोजन करते हैं, जिससे उनमें



समानता, सामाजिक समरसता एवं भाईचारे की भावना विकसित होती है। यह अनुभव विद्यार्थियों को सामाजिक भेदभाव से ऊपर उठकर सामूहिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भी विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को विशेष महत्व दिया है। नीति में जीवन कौशल, मानसिक स्वास्थ्य, नैतिक मूल्यों तथा भावनात्मक सुदृढ़ता को शिक्षा का अभिन्न अंग माना गया है। विद्यालयों में बच्चों को ऐसा वातावरण प्रदान करने पर बल दिया गया है जहाँ वे स्वयं को सुरक्षित, सम्मानित और समर्थित महसूस करें। इससे विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा सकारात्मक सामाजिक व्यवहार का विकास होता है।

बाल विकास योजनाओं का प्रभाव विद्यार्थियों के व्यवहार एवं व्यक्तित्व में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। जिन बच्चों को प्रारंभिक अवस्था में उचित पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ, शिक्षा तथा भावनात्मक सहयोग प्राप्त होता है, वे सामान्यतः अधिक आत्मविश्वासी, सहयोगी एवं सामाजिक रूप से सक्रिय होते हैं। ऐसे विद्यार्थी समूह गतिविधियों में भाग लेने, अपने विचार व्यक्त करने तथा दूसरों के साथ सकारात्मक संबंध स्थापित करने में सक्षम होते हैं। इसके विपरीत जिन बच्चों को विकास संबंधी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं हो पातीं, उनमें आत्महीनता, असुरक्षा, आक्रामकता तथा भावनात्मक असंतुलन जैसी समस्याएँ देखने को मिल सकती हैं।

विद्यालय भी विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास का एक महत्वपूर्ण माध्यम है। विद्यालयों में आयोजित विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियाँ, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा सामूहिक परियोजनाएँ विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, सहयोग, सहनशीलता तथा सामाजिक समायोजन का विकास करती हैं। बाल विकास योजनाएँ इन गतिविधियों को समर्थन प्रदान करके विद्यार्थियों के समग्र विकास को और अधिक प्रभावी बनाती हैं।

वर्तमान समय में यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि बाल विकास योजनाएँ विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास को किस सीमा तक प्रभावित करती हैं। यद्यपि इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण एवं शिक्षा में सुधार करना है, फिर भी इनके माध्यम से बच्चों के व्यक्तित्व के सामाजिक एवं भावनात्मक पक्षों पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इसलिए इन योजनाओं की प्रभावशीलता का अध्ययन करना आवश्यक है, ताकि उनकी उपलब्धियों तथा सीमाओं का मूल्यांकन किया जा सके और भविष्य में उन्हें अधिक प्रभावी बनाया जा सके।

अतः प्रस्तुत अध्ययन "बाल विकास योजनाओं का विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास पर प्रभाव" विषय पर केंद्रित है। यह अध्ययन विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार, भावनात्मक संतुलन, आत्मविश्वास, सहयोग, सहानुभूति तथा सामाजिक समायोजन पर बाल विकास योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करने का प्रयास करेगा। यह शोध शिक्षा, बाल विकास तथा सामाजिक कल्याण के क्षेत्र में उपयोगी निष्कर्ष प्रदान करने के साथ-साथ नीति-निर्माताओं, शिक्षकों एवं अभिभावकों के लिए भी मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

अध्ययन के उद्देश्य –

1. बाल विकास योजनाओं की अवधारणा एवं स्वरूप का अध्ययन करना।
2. विद्यार्थियों के सामाजिक विकास पर बाल विकास योजनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करना।
3. विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास पर बाल विकास योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सहयोग तथा सामाजिक सहभागिता के विकास में योजनाओं की भूमिका का मूल्यांकन करना।
5. बाल विकास योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु सुझाव प्रस्तुत करना।



व्याख्या –

बाल विकास योजनाएँ बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर बनाई गई कल्याणकारी योजनाएँ हैं। इन योजनाओं के माध्यम से बच्चों को स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा, सुरक्षा तथा सामाजिक संरक्षण प्रदान किया जाता है। समेकित बाल विकास सेवा योजना के अंतर्गत बच्चों को पूरक पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ तथा पूर्व-प्राथमिक शिक्षा प्रदान की जाती है। इससे बच्चों में सामाजिक सहभागिता एवं सहयोग की भावना विकसित होती है। प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना विद्यार्थियों को विद्यालय में पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराती है। यह योजना विद्यार्थियों को एक साथ बैठकर भोजन करने का अवसर प्रदान करती है, जिससे उनमें सामाजिक समानता, सहयोग तथा सामूहिकता की भावना विकसित होती है। विद्यालयी गतिविधियों में भागीदारी के कारण विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होता है।

बाल विकास योजनाएँ विद्यार्थियों के भावनात्मक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। पोषण, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं सुरक्षित वातावरण बच्चों में आत्मविश्वास का निर्माण करते हैं। जब बच्चों को विद्यालय एवं समुदाय में सम्मान और सहयोग मिलता है, तो उनमें आत्मसम्मान की भावना विकसित होती है। इससे वे अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से व्यक्त कर पाते हैं तथा मानसिक तनाव का सामना करने में सक्षम बनते हैं। इन योजनाओं के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों में सहयोग, सहानुभूति, अनुशासन, समूह कार्य, नेतृत्व क्षमता तथा सकारात्मक व्यवहार का विकास होता है। साथ ही विद्यालयों में उनकी उपस्थिति और सहभागिता भी बढ़ती है। सामाजिक रूप से सक्रिय तथा भावनात्मक रूप से संतुलित विद्यार्थी भविष्य में जिम्मेदार नागरिक बनते हैं।

निष्कर्ष –

अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बाल विकास योजनाएँ विद्यार्थियों के सामाजिक एवं भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इन योजनाओं के माध्यम से विद्यार्थियों को पोषण, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा सुरक्षा संबंधी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास संभव हो पाता है। विद्यार्थियों में आत्मविश्वास, सामाजिक समायोजन, सहयोग, सहानुभूति एवं नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। साथ ही भावनात्मक स्थिरता एवं मानसिक स्वास्थ्य में भी सुधार देखने को मिलता है। इसलिए बाल विकास योजनाएँ विद्यार्थियों के समग्र विकास की आधारशिला सिद्ध होती हैं।

सुझाव :-

1. बाल विकास योजनाओं का प्रभावी एवं पारदर्शी क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए।
2. विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केंद्रों में सामाजिक एवं भावनात्मक अधिगम कार्यक्रम संचालित किए जाएँ।
3. अभिभावकों को बाल विकास योजनाओं के प्रति जागरूक बनाया जाए।
4. विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं परामर्श सेवाओं को सुदृढ़ किया जाए।
5. ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में योजनाओं की पहुँच बढ़ाई जाए।
6. विद्यालयों में खेल, सांस्कृतिक एवं समूह गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाए।
7. शिक्षकों को सामाजिक एवं भावनात्मक विकास से संबंधित विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
8. योजनाओं की नियमित निगरानी एवं मूल्यांकन किया जाए।



संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. अग्रवाल, जे.सी. (2018). 'शैक्षिक मनोविज्ञान'. नई दिल्लीरू विकास प्रकाशन।
2. भटनागर, ए.बी. (2019). 'बाल विकास एवं शिक्षा'. मेरठरू आर. लाल बुक डिपो।
3. पांडेय, रामशकल (2020). 'शिक्षा का समाजशास्त्र'. आगरारू विनोद पुस्तक मंदिर।
4. भारत सरकार, महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 'समेकित बाल विकास सेवा (प्ले) रिपोर्ट'।
5. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020'।
6. एनसीईआरटी (छबत्ज). 'बाल विकास एवं अधिगम'।
7. यूनेस्को (UNESCO). *Education and Child Development Reports.
8. यूनिसेफ (UNICEF). *Child Well&being and Development Reports.
9. शर्मा, आर. (2021). 'बाल विकास और शिक्षा'. जयपुर, साहित्य प्रकाशन।
10. सिंह, एस. एवं वर्मा, पी. (2022). "बाल विकास योजनाओं का विद्यार्थियों पर प्रभाव", भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), 45–58।

